भारतीय मध्यम वर्ग : बदलता परिदृश्य

I भूमिका के बदले

जनवरी **2008** में भारत के चुनाव आयोग के पास एक नयी राजनीतिक पार्टी ने अपना पंजीकरण कराया। इस पार्टी का नाम है 'जागो पार्टी'। यह पार्टी अपने को नौजवान पीढ़ी की पार्टी कहती है और इसका उद्देश्य है भारत को एकदम सुरक्षित, मजबूत और धनी देश बनाना। यह पार्टी इस उद्देश्य को लोकतांत्रिक संस्थाओं का इस्तेमाल करते हुए और उन्हें ज्यादा मजबूत बनाते हुए हासिल करेगी। इस पार्टी का दर्शन इस प्रकार है :

'**1991** में उदारीकरण के बावजूद आर्थिक तौर पर भारत एक सरकार के प्रभुत्व वाली अर्थव्यवस्था है जिसका मूलमंत्र है धनी लोग गरीबों के शोषक हैं, जितना संभव हो उन पर कर लगाओ और इस धन को सरकारी योजनाओं के जरिये गरीबों तक स्थानांतरित करो। गरीबों का हित साधने के लिए सरकार को यथासंभव क्षेत्रों में व्यवसाय करना चाहिए। गरीबों की और अधिक मदद करने के लिए ज्यादा से ज्यादा सरकारी नौकरियों और सुविधाओं को सामाजिक तथा आर्थिक तौर पर पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षित किया जाना चाहिए।

'सभी राजनीतिक पार्टियां इस नीति का समर्थन करती है। इस विकृत दृष्टि ने देश को भ्रष्टाचार, अकुशलता, ग्राहकों की जरूरतों की अवहेलना, योग्यता की अवहेलना, बेरोजगारी, भुखमरी इत्यादि के दलदल में धकेला है।

'जागो पार्टी इस दृष्टि से असहमत है।

'हम मानते हैं कि धनी और उद्यमी गरीबों के शोषक नहीं बल्कि उद्योग व व्यापार के जरिये ***धन को पैदा करने वाले*** हैं। जहां लोगों को उत्पादक रोजगार मिलता है, जहां उपभोक्ता को कम दाम पर बेहतर उत्पाद मिलता है, जहां उत्पादकता लगातार बढ़ती रहती है और जहां सही प्रयास और सही कुशलता हासिल कर कोई भी व्यक्ति धनी बन सकता है।

'शोषण का सिद्वान्त, जिस पर कम्युनिज्म और समाजवाद का सिद्वान्त आधारित है और जिस पर भारत में नेहरू किस्म का 'कल्याणकरी' राज्य खड़ा किया गया था और अभी भी सभी पार्टियों द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है, वह पूर्णतया गलत साबित हुआ है। ... ...'

इस दर्शन पर खुद को खड़ा करते हुए 'जागो पार्टी' ने अपने केन्द्रीय नारे इस प्रकार निर्धारित किये :

- किसी को आरक्षण नहीं, सभी को अंग्रेजी में शिक्षा से रोजगार।
- आतंकवाद, भ्रष्टाचार, हत्या और बलात्कार के लिए मृत्युदंड, तीन महीने में पैफसला।
- भ्रष्टाचार ग्रस्त सब्सिडी का खात्मा। सभी मतदाताओं को **600** रुपये प्रति मास।

निजीकरण के जरिये सभी शहरों और गांवों को बिजली तथा आरामदायक रेल यात्रा। कम सरकारी गतिविधियां और अधिक निजी उद्यम।

- **4** लाख रुपये तक कोई आयकर नहीं। करों की संख्या और दरों में कमी।

'जागो पार्टी' व्यवस्था के भीतर रहते हुए व्यवस्था को बदलने में विश्वास करती है। इस पार्टी के नायक हैं– ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, टी.एन. शेषन, नारायण मूर्ति, के.पी.एस. गिल, किरण बेदी, जोगिन्दर सिंह, जय प्रकाश नारायण, अरविंद केजरीवाल, अन्ना हजारे, अरुणा राय, संदीप पाण्डेय। यह पार्टी अपने लिए प्रतिबद्व, शिक्षित और गैर राजनीति नागरिकों को अपना कार्यकर्ता बनाना चाहती है। इसका मूल आप्त वाक्य ह– 'शानदार से शानदार सदिच्छाओं के मुकाबले छोटी से छोटी कार्यवाही भी बेहतर है'।

इस पार्टी के पदाधिकारियों की जीवन कुण्डली इस प्रकार है :

इसके अध्यक्ष दीपक मित्तल का जन्म हरियाणा के एक गरीब परिवार में हुआ था। उन्होंने **19** साल की उम्र मे व्यवसाय शुरू किया और इस समय एक सफल व्यवसाई हैं।

इसके सलाहकार कैप्टन अहमद हैं। इनका जन्म कर्नाटक के बीदर में हुआ। इस समय एक राष्ट्रीय कंपनी के आन्ध्र प्रदेश के कारोबार को संचालित करते हैं।

महासचिव बजरंग भारद्वाज का जन्म हरियाणा के एक सामान्य परिवार में हुआ। अब सफल व्यवसायी हैं।

इसके सचिव नीरज कुमार वर्मा पटना के हैं और वकालत और प्रबंधन की पढ़ाई किये हुए हैं। कई कंपनियों में विभिन्न पदों पर।

दूसरे सचिव आदर्श कुमार सिंह भी बिहार के हैं और वे एक गांव में पैदा हुए। वे **1993** के आइ.ए.एस. बैच के हैं। इन्होंने **2005** में सेवानिवृत्ति ले ली।

'जागो पार्टी' की बेबसाइट **(www.jago.in)** के अनुसार अक्टूबर तक इसके देश भर में **2** लाख सदस्य थे। यह मूलतः इंटरनेट आधारित पार्टी है। यह आगामी चुनाव में अपने उम्मीदवार खड़ा करने का इरादा रखती है।

II वैश्वीकरण के जमाने का भारतीय मध्यम वर्ग

उपरोक्त 'जागो पार्टी' परम्परागत अर्थों में कोई राजनीतिक पार्टी नहीं है। यह निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण के जमाने में उभर कर सामने आये भारतीय मध्यम वर्ग की कुंठाओं को स्वर देने वाली पार्टी है। यह अराजनीतिक, राजनीति से घृणा करने वाले लोगों की पार्टी है। यह महत्वपूर्ण बात है कि पिछले सालों में मध्यम वर्ग की पार्टी बनाने के कई सारे प्रयास हुए हैं। उत्तर प्रदेश विधानसभा के पिछले चुनाव के समय आई.आई.टी. कानपुर के कुछ छात्रों–अध्यापकों ने ऐसी पार्टी बनायी भी। दक्षिण भारत में मद्रास में भी ऐसे प्रयास हुए थे। अभी कुछ महीने पहले मेधा पाटकर एण्ड कंपनी ने भी अपने एक राजनीतिक पार्टी की घोषणा की।

मार्क्सवादियों के लिए यह स्थापित बात रही है कि मध्यम वर्ग अपनी राजनीतिक पार्टी नहीं बना सकता। वह अपनी भौतिक स्थिति में ही डावांडोल रहता है कि स्थाई पार्टी में खुद को संगठित करना उसके लिए बहुत मुश्किल है। यदि वह विशेष परिस्थितियों में ऐसा कर भी पाता है तो केवल पूंजीपति वर्ग की सेवा ही करेगा।

ऐसे में 'जागो पार्टी' बनाने जैसे प्रयास उतना राजनीतिक पार्टी बनाने का प्रयास नहीं है जितना मध्यम वर्ग की कुंठाओं को स्वर देने का। यह आश्चर्य नहीं कि मध्यम वर्ग के झूठे अस्तित्व की तरह इसके विचार भी झूठे तर्कों पर आधारित हैं। आज भारत में कौन खुलेआम कहने का साहस कर सकता है कि सभी राजनीतिक पार्टियां 'कल्याणकारी' राज्य की समर्थक हैं? या कि वर्तमान विश्व आर्थिक संकट के समय कौन उदारीकरण की नीतियों की खुली वकालत कर सकता है?

1980 के दशक में शुरू हुए और **1991** में बेलगाम ढंग से लागू किये गये निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण के फलस्वरूप देश में एक नया मध्यम वर्ग पैदा हुआ है या यह कहना ज्यादा बेहतर होगा कि देश के मध्यम वर्ग ने एक नया रूप ग्रहण किया है। इसे निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण की नीतियों वाला मध्यम वर्ग या एल.पी.जी. मध्यम वर्ग (लिबरलाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन, ग्लोबलाइजेशन वाला मध्यम वर्गद्ध कहा जा सकता है। इस एल.पी.जी. मध्यम वर्ग की एक खास जीवन शैली और खास मानसिक बनावट है। इसकी एक निश्चित संरचना है।

यह याद करना लाभदायक है कि जब **1991** में नरसिंह राव और मनमोहन सिंह की सरकार ने निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण की नीतियां लागू करनी शुरू कीं तो विदेशी पूंजी को देश में निवेश के लिए आमंत्रित करते हुए कहा कि यहां एक इतना बड़ा मध्यम वर्ग है जिसकी आबादी यूरोप या अमेरिका के बराबर है। यह एक बड़ा बाजार बनता है जिस पर विदेशी निवेशकों को ध्यान देना चाहिए। तब से लेकर आज तक सारे देशी–विदेशी निवेशक और सरकारें इस मध्यम वर्ग की बात करती रही हैं।

इस तरह मध्यम वर्ग उदारीकरण–वैश्वीकरण की नीतियों का लक्ष्य और वाहक दोनों था। इसलिए इसने बहुत तेजी के साथ एल. पी.जी. मध्यम वर्ग को जन्म दिया। यह मध्यम वर्ग सब कुछ भूल–भालकर पूंजीपति वर्ग की निजीकरण– उदारीकरण–वैश्वीकरण की नीतियों का पक्का समर्थक बन गया। **1980** के दशक में नयी मोटर साइकिलों और मारुति कार ने इस मध्यम वर्ग के प्रतीक चिर्िका काम किया तो अब शॉपिंग माल यह कर रहे हैं।

उदारीकृत–वैश्वीकृत भारत में मध्यम वर्ग ही अपने को 'आम आदमी' समझता है। यह हठपूर्वक असली आम आदमी की मौजूदगी से इंकार करता है क्योंकि वह वास्तव में उसकी दृष्टि से ओझल कर दिया गया है। असली आम आदमी (मजदूर, अर्ध सर्वहारा, गरीब–छोटे किसानद्ध से उसका वास्ता केवल चौकीदार, घरेलू नौकर, ऑफिस अटेन्डेन्ट या फिर फैक्टरी में 'मैनपावर' के रूप में पड़ता है। इन सब जगहों पर वह अपने को इसके विरोध में खड़ा पाता है और इसीलिए उसके लिये यह ज्यादा सुभीते का होता है कि इन्हें ज्यादा से ज्यादा अनिवार्य 'न्यूसेन्स' माने।

एल.पी.जी. मध्यम वर्ग स्वयं को ही आम आदमी मानता है। यह अकारण नहीं है कि ये इस वर्ग को संबोधित प्रचार माध्यमों में (सभी अंग्रेजी पत्र–पत्रिकाएं और टी.वी. चैनल इसी वर्ग को संबोधित हैं।द्ध करदाता नागरिकों की बात की जाती है। विभिन्न संदर्भों में बात की जाती है कि इसका बोझ तो करदाताओं पर ही पड़ेगा, या कि ईमानदार करदाता को ही यह सब सहना पड़ता है। यहां आशय स्पष्ट होता है। यहां केवल आयकर देने वालों की बात की जाती है। मध्यम वर्ग की नजर में केवल वही आयकर अदा करता है क्योंकि आयकर गरीब लोगों पर लगता नहीं और पूंजीपति वर्ग विभिन्न तरीकों से इससे बच निकलता है।

स्वयं को आम आदमी मानने के कारण अक्सर ही इस वर्ग की शिकायत होती है कि मजदूर वर्ग या अन्य गरीब लोगों की हड़ताल, बन्द, घेराव इत्यादि का शिकार आम आदमी को होना पड़ता है। जैसा कि हम आगे देखेंगे, मध्यम वर्ग स्वयं निजी तरीके से अपनी जरूरतें पूरी कर लेता है इसीलिए उसे इस तरह के सामूहिक हड़ताल–प्रदर्शन फालतू ही नहीं, समाज के लिए हानिकारक लगते हैं। वह उन्हें कुछ निजी हितों के समर्थकों द्वारा पूरे समाज (मध्यम वर्ग के समाजद्ध को बंधक बना लिए जाने के रूप में नजर आता है।

स्वयं को ही आम आदमी, साधारण नागरिक मानने वाले एल.पी.जी. मध्यम वर्ग की प्रमुख पहचान नागरिकता नहीं है। वास्तव में उसकी प्रमुख पहचान उपभोक्ता ही है। ज्यादा से ज्यादा वह उपभोक्ता नागरिक है।

जब भारत के पूंजीपति वर्ग और उसकी सरकार ने विदेशियों को मध्यम वर्ग का लालच देकर आमंत्रित किया तो वे इसी उपभोक्ता को स्थापित कर रहे थे। सही बात तो यह है कि निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण के पूरे दौर में नागरिक अधिकारों में कटौती होती चली गयी है, नागरिकों के विरोध–प्रदर्शन का दायरा सिमटता गया है, राज्य अधिकाधिक निरंकुश होता गया है। इसके बरक्स उपभोक्तावाद स्थापित होता गया है। नागरिक के मुकाबले उपभोक्ता को स्थापित करना पूंजीपति वर्ग की सोची–समझी नीति रही है। यह उसके लिए तात्कालिक और दूरगामी दोनों तौर पर फायदेमंद है। सभी अधिकारों और अधिकारों की चेतना से वंचित खाऊ–पीऊ मध्यम वर्ग उसके लिए सबसे बेहतर स्थिति है।

आज यह यूं ही नहीं हो रहा है कि उपभोक्ता सामानों के पीछे भागने वाला मध्यम वर्ग, इन सामग्रियों की राई–रत्ती खबर रखने वाला मध्यम वर्ग अपने नागरिक अधिकारों में कटौती को इतनी सहजता से स्वीकार कर ले रहा है, बल्कि उसे स्वेच्छा से समर्पित कर दे रहा है। देश की एकता–अखंडता को बचाने के नाम पर अलगाववाद–आतंकवाद से लड़ने के नाम पर यह धड़ल्ले से हो रहा है। यहां तक कि सरकार खुलेआम यह कह रही है कि लोग सरकार का मुखबिर बन जायें और यह वर्ग हां में हां मिला रहा है। वह खुद 'कानून का पालन करने वाला' भला नागरिक है और उसे सरकार की मदद करने में कोई गुरेज नहीं है। अन्य मामलों में सरकार और बुर्जुआ नेताओं से बुरी तरह चिढ़ा हुआ यह वर्ग इस मामले में पूर्णतया उसके साथ है। उपभोक्तावादी एल.पी.जी. मध्यम वर्ग अपने नागरिक अधिकारों को समर्पित कर सरकारी एजेन्ट में तब्दील हो गया है।

इस एल.पी.जी. मध्यम वर्ग ने अपने आप को मजदूर वर्ग एवं अन्य मेहनतकश जनता से स्वयं को काट लिया है। वह उससे अलग हो गया है। इसकी प्रतीक अभिव्यक्ति है हाउसिंग सोसाइटी एवं शॉपिंग मॉल। इतना ही नहीं, इसने स्वयं को उनके विरोध में खड़ा कर लिया है। वह कुछ टुकड़ों की खातिर पूंजीपति वर्ग के तर्कों पर बिक गया है।

इस मध्यम वर्ग की अपनी अलग कालोनियां हैं, इसके अलग स्कूल हैं, अलग दुकानें हैं, अलग अस्पताल हैं, अलग यातायात के साधन हैं, अलग मनोरंजन केन्द्र हैं। पहले देश में केवल पूंजीपति वर्ग का ही अलग जीवन था। अब मध्यम वर्ग ने भी अपने को देश के बाकी मजदूर–मेहनतकश जनता से अलग कर लिया है।

न केवल इसने बाकी जनता से स्वयं को अलग किया है बल्कि यह अपने दृष्टि पटल से उनको पूर्णतया गायब कर देना चाहता है। गरीब जनता का रहन–सहन इसकी आंखों में खटकता है। उनकी गंदगी इसे बर्दाश्त नहीं होती। उनकी झुग्गी– झोपड़ियां, उनके ठेले खोमचे उसके मुक्त आवागमन में बाधा पैदा करते हैं और प्रदूषण फैलाते हैं। अपनी कालोनी, दुकानें, स्कूल, अस्पताल, यातायात के साधन, मनोरंजन केन्द्र इत्यादि अलग करके इसने उनसे मुक्ति पा ली थी। अब सार्वजनिक जगहों पर भी उसे गरीब लोगों से मुक्ति चाहिए। कोई आश्चर्य नहीं कि छोटे कस्बों से लेकर बड़े शहरों तक सरकारें इतनी मुस्तैदी से 'अतिक्रमण हटाओ' और 'सौन्दर्यीकरण' अभियान चला रही

है। वास्तव में यह पूंजीपति वर्ग और मध्यम वर्ग द्वारा मजदूर–मेहनतकश जनता के खिलाफ युद्व ह–शहरों के सार्वजनिक स्थलों के लिए। इस युद्व में भाजपा से लेकर माकपा की बुद्वदेव सरकार तक सब शामिल हैं।

मध्यम वर्ग अपनी दृष्टि की सीमा से गंदे–फंदे मजदूर वर्ग और अन्य मेहनतकश जनता को गायब कर देना चाहता है। लेकिन बात केवल इतनी ही नहीं है। वह सीधे–सीधे इनके विरोध में है। इसे लगता है कि देश की सारी राजनीतिक पार्टियां वोट की खातिर गरीब लोगों के लिए भांति–भांति की सुविधाओं की बात करती हैं। इसे वह 'लोकप्रियतावाद' कहता है। इसी लोकप्रियतावाद के कारण सरकार राहत पर अरबों–खरबों रुपया लुटाती है। यह गरीब लोगों तक तो पहुंचता नहीं, उल्टा सरकार का बजट गड़बड़ा जाता है। इस तर्क पर आधारित कर यह सब्सिडी का विरोध करता है। यह मानने के कारण कि सरकार की आय मुख्यतः उसके चुकाये कर से होती है, उसका गुस्सा आसमान पर चढ़ जाता है।

इस तरह अपने को विभिन्न झूठे तर्कों से लैस कर यह एल.पी.जी. मध्यम वर्ग गरीब जनता के खिलाफ खड़ा हो जाता है। उसे आत्म हत्या करते किसान दिखाई देना बन्द हो जाते हैं। उसे छंटनी का शिकार हो रहे मजदूरों से कोई सहानुभूति नहीं होती।

लेकिन स्वयं पूंजीपति वर्ग की तरह मध्यम वर्ग अपने तर्कों का इस्तेमाल अपने लिए नहीं करता। यह सीधा सा सवाल वह नहीं पूछता कि आखिर सब्सिडी की भारी राशि किसकी जेब में, किस वर्ग की जेब में जाती है? भ्रष्टाचार का वर्तमान मध्यम वर्ग की पैदाइश से क्या सम्बन्ध है? जो भारी मात्रा में सब्सिडी इस वर्ग को मिल रही है (उच्च शिक्षा के सरकारी संस्थाओं को सब्सिडीद्ध वह उसे क्यों मिलनी चाहिए? एक वर्ग के बतौर वह सरकार को जितना देता है और सरकार इस वर्ग को जितना देती है, उसमें क्या संबंध है। ये असुविधाजनक सवाल हैं और मध्यम वर्ग में यह साहस नहीं होता कि इन सवालों को उठाये।

यह मध्यम वर्ग अपने चरित्र में अराजनीतिक है। इसका नारा है – 'नो पॉलिटिक्स प्लीज'। यह राजनीतिक नेताओं को छंटे हुए बदमाश मानता है तथा राजनीति को पतित और भ्रष्ट लोगों का अड्डा। इसकी अपनी रणनीति है – निजी पहुंच और सौदेबाजी।

यह एल.पी.जी. मध्यम वर्ग आज जहां है वहां राजनीतिक फैसले के कारण ही–कल्याणकारी राज्य और बाद में निजीकरण, उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीति के कारण। लेकिन इस वर्ग को यह नहीं पता। झूठी चेतना के चलते यह अपनी वर्तमान हैसियत को अपनी निजी योग्यता, निजी अध्यवसाय का परिणाम मानता है। इसका हर सदस्य जहां है वहां अपने निजी प्रयासों के चलते पहुंचा है इसलिए यह वर्ग मानता है कि उनके निजी प्रयास ही सब कुछ हैं। यही नहीं, वह इसे विस्तारित करता है और बाकी वर्गों पर लागू कर देता है। वह मजदूर वर्ग पर भी इस लागू करता है और इसलिए मानता है कि मजदूरों के संगठन केवल 'न्यूसेन्स' ही पैदा करते हैं। वह तरक्की की अपनी निजी रणनीति को, समस्याओं को हल करने की अपनी निजी रणनीति को एकमात्र सही रणनीति मान लेता है और बड़े आराम से यह भूल जाता है कि मजदूर वर्ग को यह रास्ता उपलब्ध नहीं है। एक मजदूर को पुलिस की पिटाई से बचाने के लिए उसका मित्र, परिचित या रिश्तेदार पुलिस अफसर नहीं होता। भुखमरी की रेखा के पास या उससे नीचे जी रहे झुग्गी–झोंपड़ी के मजदूर बच्चे को तरक्की करने के लिए निजी रणनीति के संसाधन नहीं होते। इसीलिए यदि उसमें से कोई कभी तरक्की कर जाता है तो समाचार बन जाता है।

पूंजीवादी राजनीति की संसदीय व्यवस्था में संख्याबल काफी महत्वपूर्ण होता है। इसीलिए बुर्जुआ पार्टियां भी भांति–भांति के तरीकों से मजदूर–मेहनतकश जनता को लुभाती हैं। मध्यम वर्ग की नजर में यह लोकप्रियतावाद या वोट बैंक की राजनीति होता है। मध्यम वर्ग बुर्जुआ राजनीति की इस गतिकी को या तो नहीं समझता या फिर अपने संख्याबल के सीमित होने के एहसास के चलते वह इसे अपने लिए कारगर नहीं समझता। इसीलिए वह न केवल बुर्जुआ चुनावी राजनीति से मुंह फेर लेता है बल्कि उसका कटु आलोचक भी बन जाता है। यही प्रवृत्ति उसे एक व्यक्ति की तानाशाही का समर्थक बनने की ओर ले जाती है।

'जागो पार्टी' जैसी मध्यम वर्गीय पार्टियां अस्तित्व में आती हैं तो भी वे इस मूल अराजनीतिक स्वर को बरकरार रखती हैं। वे हठपूर्वक पूंजीवादी राजनीति को समझने से इंकार करती हैं और लोकतंत्र को इस व्यवस्था से स्वतंत्र कोई पवित्र चीज मानते हुए (जिसे राजनीतिक पार्टियों और नेताओं ने भ्रष्ट कर दिया है) इससे कुछ चमत्कार दिखाने की उम्मीद करती हैं। इसी में यह संभावना निहित है कि एक राजनीति पार्टी के रूप में स्थापित होने से पहले ही वे बिखर जायें।

इसके बरक्स मध्यम वर्ग अपनी निजी रणनीति के तहत भांति–भांति के दबाव ग्रुप के रूप में काम करने को ज्यादा सुभीते की चीज पाता है। पिछले सालों में रेजिडेंट वेलफेयर एसोसियेशन जैसी संस्थाओं का मुखर होना इसी की अभिव्यक्ति है। इसी प्रवृत्ति के चलते यह वर्ग जब सामाजिक रूप से सक्रिय होता है तो गैर सरकारी संगठनों में शामिल होकर अपने पाप–बोध से मुक्त हो जाता है।

जैसा कि पहले कहा गया है, यह मध्यम वर्ग निजीकरण–उदारीकरण– वैश्वीकरण की नीतियों का परिणाम और उसका वाहक है। यह इन नीतियों का पक्का समर्थक है। चूंकि ये नीतियां पूंजीपति वर्ग की हैं और वही उनका असली प्रस्तोता है, इसीलिए मध्यम वर्ग के लिए ये नीतियां अमूर्त रूप ग्रहण कर लेती हैं। पूंजीपति वर्ग इन नीतियों को उस रूप में नहीं लेता और वक्त आने पर वह इसमें परिवर्तन के लिए भी तैयार हो जायेगा। लेकिन मध्यम वर्ग के लिए ये एक मूल्य के रूप में महत्वपूर्ण हो जाती हैं। इनकी वास्तविक सीमाओं से अनजान वह इन नीतियों का अति उत्साही समर्थक हो जाता है। वह राजा से भी ज्यादा राजा का निष्ठावान हो जाता है।

अमेरिकी साम्राज्यवादी वर्तमान नीतियों को सारी दुनिया में प्रसारित करने वालों में सबसे आगे हैं। **1990** के दशक में इन्हीं नीतियों के चलते बाकियों के मुकाबले उन्होंने थोड़ी वरीयता भी हासिल की। अमेरिकी साम्राज्यवादियों की इस सफलता से चकाचौंध भारतीय मध्यम वर्ग इसका बड़ा समर्थक रहा है। जिन दिनों सारी दुनिया में इनकी थू–थू हो रही थी, उन दिनों भी भारतीय मध्यम वर्ग में अमेरिकी साम्राज्यवादियों को बड़ा समर्थन हासिल था। इस वर्ग के लिए अमेरिका उसके सपनों का देश है।

और ठीक अमेरिकियों की तरह ही यह वर्ग भारी आत्मकेन्द्रित और अलगाव का शिकार है। देश की मजदूर–मेहनतकश आबादी से खुद को काटकर, पूंजीपति वर्ग की जूठन पर पल रहा यह मध्यम वर्ग जिस उपभोक्तावादी दुनिया में जी रहा है वहां लगातार अपनी खोल में कैद होते जाना इसकी नियति है। इसकी अपनी तरक्की के लिए जरूरी है वह स्वयं को बाकी लोगों से काट ले। लेकिन यह अकेलापन उसके लिए इस कदर भारी पड़ता है कि वह इससे मुक्ति पाने के लिए छटपटाता है और भांति–भांति के बाबाओं की कुटिया और आश्रम में पहुंच जाता है। राजनीतिक ठग उसे बर्दाश्त नहीं होते धार्मिक ठगों को वह सहर्ष सब कुछ समर्पित कर देता है–अपना विश्वास और धन दोनों।

इस आत्मकेन्द्रित, पृथक्कृत मध्यम वर्ग की आत्मिक दुनिया एकदम खाली है। इसने सार्वजनिक हित को तिलांजली देकर जिस स्वर्ग का निर्माण किया उसमें किन्हीं भी मानवीय रिश्तों का प्रवेश वर्जित है। सुरक्षा गार्डों से रक्षित उसकी कालोनियों में जैसे बाहरी लोगों का प्रवेश वर्जित है वैसे ही मानवीय भावनाएं उसके जीवन में प्रवेश नहीं कर सकतीं। उन्हें केवल कभी–कभी और वह भी निश्चित समय के लिए रजिस्टर में नाम लिखाकर भीतर आना होगा। परिणाम यह होता है कि यह तृप्त मध्यम वर्ग आत्मिक तृष्णा की भरपाई ठगों के आश्रमों में करता है या फिर मानसिक चिकित्सालयों के चक्कर लगाता है। पूंजीपति वर्ग की भौतिक निश्चिंतता तो उसे नसीब नहीं होती, उलटे वह उसकी मानसिक बेचैनी का शिकार जरूर हो जाता है।

इस आत्मकेन्द्रित, पृथक्कृत मध्यम वर्ग ने एक ओर तो अपने ही देश के मजदूर और मेहनतकश वर्ग से स्वयं को काटा है, दूसरी ओर वह सीधे साम्राज्यवादी संस्कृति की गोद में जा गिरा है। बल्कि यह एक ही प्रक्रिया के जरिये हुआ है। अपने यहां कटना और कॉस्मोपॉलिटन हो जाना दो अलग–अलग चीजें नहीं हैं।

एल.पी.जी. मध्यम वर्ग जिन उपभोक्ता सामग्रियों का इस्तेमाल कर रहा है वह साम्राज्यवादी पूंजी द्वारा आपूर्ति की जाती हैं। साम्राज्यवादी पूंजी अपनी पूरी पकड़ के लिए साथ ही अपनी साम्राज्यवादी संस्कृति भी प्रचारित–प्रसारित करती है। आज इस संस्कृति का व्यवसाय भी अपने आप में एक बड़ा व्यवसाय है। एल.पी.जी. मध्यम वर्ग धड़ल्ले से इस सांस्कृतिक उत्पाद का उपभोग कर रहा है और उसके रंग में रंगता जा रहा है। पिछले दो दशकों में भारत में इस संस्कृति का तेजी से प्रसार हुआ है। बॉलीवुड की फिल्मों से लेकर टी.वी. के कार्यक्रमों तक में सब जगह यह दृष्टिगोचर है।

एल.पी.जी. मध्यम वर्ग के लिए उसका साम्राज्यवादी संस्कृति में उभ–चू करना वैश्वीकरण है, वैश्विक नागरिक बनना है। यह उसके लिए स्थानीयतावाद से उबरना है। दूसरी ओर साम्राज्यवादी पूंजी इसका बखूबी इस्तेमाल कर रही है। वह स्थानीय संस्कृति को इस तरह से ढाल कर परोस रही है कि वह एल.पी.जी. मध्यम वर्ग को स्वीकार हो जा रहा है। स्थानीय त्यौहारों का व्यावसायीकरण करने से लेकर उत्पादों का स्थानीय संस्कृति के छोंके के साथ परोसना इसका अहम हिस्सा है। साम्राज्यवादी पूंजी का वैश्विक उत्पाद स्थानीयता के रंग में रंगकर परोसा जा रहा है और मध्य वर्ग उसे शिरोधार्य कर रहा है।

साम्राज्यवादी उपभोक्ता सामग्री और संस्कृति के इस प्रसार के कारण एल.पी.जी. मध्यम वर्ग अपने देश में रहते हुए भी मिसफिट महसूस करता है जबकि साम्राज्यवादी देशों में जाकर वह चैन पा जाता है। यह बात अलग है कि यहां वह बॉस होता है जबकि साम्राज्यवादी देशों में उसे नस्लभेद का शिकार होना पड़ता है।

III मध्यम वर्ग का अतीत

भारतीय मध्यम वर्ग का उदय अंग्रेजी राज में बाबू के रूप में हुआ। मैकाले के प्रसिद्व शब्दों में अंग्रेजों को अपना शासन चलाने के लिए अपने और जनता के बीच से ऐसे मध्यस्थ लोगों की जरूरत थी जो रंग–रूप में तो भारतीय हों लेकिन अपनी रुचियों और मानसिकता में अंग्रेज हों। इन्हें अंग्रेज अफसरों के मातहत रहना था और भारतीय जनता पर शासन करने में उनकी मदद करना था।

भारतीय जातिगत संरचना में ब्राह्मण और कायस्थ जातियां ही उस समय पढ़ने–लिखने और बाबू बनने की स्थिति में थीं। इन्हीं जातियों का पढ़ने–लिखने का इतिहास था और सदियों से ये ही राजाओं–रजवाड़ों के यहां लिखा–पड़ी और खाता–बही का काम करते रहे थे। इसीलिए शुरू में बाबू इन्हीं जातियों से पैदा हुए।

अपनी पैदाइश की प्रक्रिया में ही यह बाबू अपने आस–पास की जनता से कट जाने के लिए अभिशप्त था। बल्कि अंग्रेजों का उद्देश्य भी यही था – रुचियों और मानसिकता में अंग्रेज। यदि ऐसा नहीं होता तो अंग्रेजों के लिए बड़ा खतरा पैदा हो जाता। यूरोप के ज्ञान–विज्ञान से लैस यह पढ़ा–लिखा मध्यम वर्ग अंग्रेजी राज के खिलाफ खड़ा हो जाता।

अंग्रेजी शिक्षा–दीक्षा के कारण इस बाबू मध्यम वर्ग की दोहरी पहचान और प्रवृत्ति थी। एक ओर अंग्रेजी पढ़ा–लिखा और अपने परिवेश से कटा हुआ था। यह अंग्रेजी मूड–मिजाज का था। लेकिन दूसरी ओर वह अपने परिवेश के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त नहीं था। अंग्रेजी शिक्षा के बावजूद यह भारतीय सामाजिक संरचना की मूल चीज–जाति व्यवस्था से मुक्त नहीं था और न ही तमाम धार्मिक पूर्वाग्रहों अंधविश्वासों से। अंग्रेजों ने उसे अपने और भारतीय जनता के बीच रखने की सोची थी और यह इस बाबू वर्ग की मूल विशेषता बन गई। यह अपने हर रूप में यूरोपीय आधुनिकता और भारतीय मध्ययुगीनता के बीच अटक गया। यह त्रिशंकु बन गया। दोहरी पहचान इसकी त्रासदी हो गई।

भारत का अंग्रेजीकृत बाबू मध्यम वर्ग अपनी जड़ों से कटकर भी उससे बंधा हुआ था। वह परंपरा को छोड़कर भी उसे नहीं छोड़ पा रहा था। वह भारतीय जनता से दूर जाकर भी अंग्रेजों की पांतों में समाहित नहीं हो पा रहा था। वह अंग्रेजी और यूरोपीय सभ्यता का उत्साही समर्थक था लेकिन अंग्रेज उसे मान्यता देने को तैयार नहीं थे।

वक्त के साथ इस दोहरी पहचान ने इस मध्यम वर्ग को राष्ट्रीय आंदोलन की ओर धकेला। इसने अंग्रेजी शासन से मिन्नतें करने से शुरुआत की और धीमे–धीमे अपनी मांगों में मुखर होता गया। इसने भारत में अंग्रेजी राज को, उसके परिणाम को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखना शुरू किया और उसकी आलोचना शुरू की।

इसने राष्ट्रीय आंदोलन में भी अपने चरित्र के अनुरूप तत्वों को डाला। भारत कभी एक राष्ट्र के रूप में अतीत में रहा नहीं और न यह वर्तमान में था। मध्यम वर्ग ने एक राष्ट्र का आविष्कार किया। इसके लिए उसने अतीत का महिमामंडन किया। इसके सबसे आगे बढ़े हुए लोग भी अतीत के प्रति इस मोह से मुक्त नहीं थे। लेकिन ज्यादातर समय यह मोह पोंगापंथ के समर्थन में रूपान्तरित हो जाता था। चूंकि अंग्रेज और पाश्चात्य विद्वान भारत के अतीत को घटिया नजर से देखते थे इसलिए उसकी प्रतिक्रिया में यह रूप और पुख्ता हो जाता था।

जैसा कि पहले कहा गया है यह मध्यम वर्ग ब्राह्मण और कायस्थ जैसी सवर्ण जातियों से पैदा हुआ था। शिक्षा के बाद में प्रसार के बावजूद मध्यम वर्ग के ज्यादातर लोग सवर्ण हिन्दू पृष्ठभूमि के ही रहे। मध्यम वर्ग की इस पृष्ठभूमि ने भी राष्ट्रीय आंदोलन पर अपनी छाप छोड़ी। सवर्ण हिन्दू पृष्ठभूमि के चलते यह वर्ग भारतीय समाज की मूलभूत संरचना के प्रति अंधता का शिकार बना रहा। यह संरचना थी जाति और वर्ण व्यवस्था। मध्यम वर्ग ज्यादातर जातिगत ढांचे में कैद रहा और जाति–वर्ण व्यवस्था के खात्मे की बातें भी मात्र औपचारिक कथनों तक सीमित थीं। इसके कुछ हिस्से तो खुलेआम इस संरचना के समर्थक थे।

जाति–वर्ण व्यवस्था के प्रति इस रुख ने तीखी अभिव्यक्ति अंग्रेजी राज के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन में इस द्विविधा में पाई कि पहले राष्ट्रीय आजादी हासिल की जाय या पहले सामाजिक सुधार किया जाय। चूंकि यह वर्ग क्रांतिकारी नहीं था इसलिए यह इस अंतर्विरोध को सही तरह से हल नहीं कर सकता था। अंबेदकर जैसे दलित जातियों के प्रतिनिधियों के मुख्य धारा के नेताओं से अंतर्विरोध को भी यहां से समझा जा सकता है।

जाति–वर्ण की तरह धर्म के प्रति भी मध्यम वर्ग का रुख इसी द्वैद्यता का शिकार था। एक ओर वह पश्चिम की धर्म निरपेक्षता की धारणा (धर्म का राज्य के मामलों से कोई लेना–देना नहीं है) में शिक्षित–दीक्षित था, दूसरी ओर यह खुद धर्म में गले तक डूबा हुआ था। वह धर्म के खिलाफ उस तरह का संघर्ष करने के लिए तैयार नहीं था जैसा संघर्ष यूरोप में हुआ था। धर्म की जकड़ता से बाहरी शक्तियों द्वारा मुक्त किये जाने (अंग्रेजी शिक्षा–दीक्षा के माध्यम से) के कारण वह इसके खिलाफ गहराई से संघर्ष करने की जरूरत भी नहीं महसूस

करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि इसने धर्म और धार्मिक पोंगापंथ के प्रति अजीब सा रुख अपना लिया। इसने धर्म निरपेक्षता की अपनी ही परिभाषा गढ़ ली–सर्व धर्म समभाव की।

अपनी इन चारित्रिक विशेषताओं के कारण जब राष्ट्रीय आंदोलन एक जन आंदोलन बनने लगा तब आम जन के पिछड़ेपन के सामने उसने समर्पण किया। आम जनता पर, खासकर किसान जनता पर सदियों से छाई जहालत के खिलाफ लड़ने, जनता को उससे मुक्त होने के लिए लामबंद करने के बदले उसे इसी जहालत में छोड़ दिया गया। विदेशी शासन के खिलाफ लड़ने के लिए जनता गोलबंद हुई लेकिन उसकी जहालत के खिलाफ कोई लड़ाई शुरू नहीं हुई। कुछ सुधार कार्यक्रम जरूर चलाए गये लेकिन उनका कोई मतलब नहीं था।

यहां यह कहा जा सकता है कि यह सब तो किसी जनवादी क्रांति में ही हो सकता था और भारत का पूंजीपति वर्ग तथा मध्यम वर्ग इसके लिए तैयार नहीं था। यह तो केवल सर्वहारा वर्ग ही कर सकता था। लेकिन यह बात मध्यम वर्ग के चरित्र को ही उद्घाटित करती है।

आजादी के बाद भारत के मध्यम वर्ग का तेजी से विकास हुआ। भारत के पूंजीपति वर्ग ने तात्कालिक विश्व परिस्थितियों में विकास का एक मॉडल चुना। यह मॉडल क्रांति के बदले, क्रमिक सुधारों का मॉडल था। इस मॉडल में सरकार, सार्वजनिक क्षेत्र, पंचवर्षीय योजना इत्यादि को प्रमुख भूमिका निभानी थी।

इस मॉडल को लागू करने और सफल बनाने के लिए पढ़े–लिखे लोगों, शिक्षकों, इंजीनियरों, तकनीशियनों, वैज्ञानिकों, प्रबंधकों और डाक्टरों इत्यादि की भारी मात्रा में आवश्यकता थी। भारत के मध्यम वर्ग को नौकरशाह, इंजीनियर, प्रबंधक के रूप में पूंजीपति वर्ग को अपनी सेवाएं अर्पित करनी थीं या यूं कहें कि इस रूप में पूंजीपति वर्ग को अपनी सेवाएं अर्पित करके उसे फलने–पूफलने का खूब मौका मिला। उसका खूब विकास हुआ।

आजादी के बाद भारत के पूंजीपति वर्ग ने जो 'राष्ट्र निर्माण' किया उसमें भारत के मध्यम वर्ग ने अपनी भूमिका निभाई और अपना खूब विकास किया। यह 'राष्ट्र निर्माण' वस्तुतः भारत के पूंजीपति वर्ग की पूंजी और उसके चौतरफा शासन का निर्माण था। भारत के पूंजीपति वर्ग की पूंजी तेजी से बढ़ी। देश में पूंजीवादी संबंधों का प्रसार हुआ। सार्वजनिक क्षेत्र ने निजी क्षेत्र की खूब सेवा की।

इस 'राष्ट्र निर्माण' में लगे हुए मध्यम वर्ग को भी खूब फायदा हुआ। उसकी संख्या में वृद्वि हुई। इससे भी बड़ी बात यह है कि उसकी समृद्वि में बढ़ोत्तरी हुई। तमाम कानूनी और गैर कानूनी तरीकों से यह अपनी झोली भरता रहा। एक ओर यह 'राष्ट्र निर्माण' में अपने योगदान से अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा था, तो दूसरी ओर यह अपनी चर्बी भी बढ़ाता जा रहा था। उसका इहलोक और परलोक दोनों ही सुधर रहे थे।

आजादी के बाद सुधारवादी तरीके से पूंजीवादी विकास और इस विकास में अपनी भूमिका के चलते इसकी पहले की चारित्रिक विशेषताओं में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। पहले उसने अतीत से कट कर भी उससे अपना नाता नहीं तोड़ा था, अब इसने अंग्रेज राज से मुक्ति पाकर भी औपनिवेशिक मानसिकता से अपना नाता नहीं तोड़ा। इसकी त्रिशंकु की स्थिति बनी रही। यूरोप–अमेरिका में भारी जलालत झेलने के बावजूद बड़ी संख्या में इंजीनियर–डॉक्टर एवं अन्य वहां पलायन करते रहे।

देश के क्रमशः पूंजीवादी विकास के फलस्वरूप धीमे–धीमे इस मध्यम वर्ग की संरचना में भी परिवर्तन आया। बड़े शहरों के अलावा छोटे शहरों और कस्बों तक इसका विस्तार हो गया। यही नहीं, गांवों में एक नया मध्यम वर्ग पैदा हो गया।

जातिगत स्तर पर बात करें तो मध्यम और दलित जातियों से भी अब लोग मध्यम वर्ग में बड़ी संख्या में शामिल हुए। जहां आरक्षण की नीति ने दलित जातियों से मध्यम वर्ग को पैदा किया वहीं पूंजीवादी विकास ने मध्यम जातियों से एक मध्यम वर्ग पैदा किया और उसने अभी तक अनारक्षित जगहों पर अपने लिए आरक्षण की मांग की। मंडल कमीशन का गठन और इसकी सिफारिशों को लागू करने के सिलसिले में उठा बवाल इसी की अभिव्यक्ति था।

1980 के दशक से शुरू हुए निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण (जिसने **1991** में गुणात्मक छलांग लगाई) ने मध्यम वर्ग को बदल दिया। जैसे पूंजीपति वर्ग ने अब राज्य नियंत्रित पूंजीवादी विकास के मॉडल को छोड़कर उदारीकरण–वैश्वीकरण के मॉडल को अपना लिया उसी तरह मध्यम वर्ग ने अपना चोला बदल लिया। वह नेहरूवादी समाजवाद के बदले वैश्वीकृत पूंजीवाद का पक्का समर्थक बन गया।

उपभोक्ता सामग्रियों के प्रति, खासकर विदेशी उपभोक्ता सामग्रियों के प्रति मध्यम वर्ग का लालच शुरू से ही था। **1980** के दशक की उदारीकरण की नीतियां उसके लिए एपेटाइजर साबित हुईं। मध्यम वर्ग अब तक कानूनी और गैर कानूनी तरीके से पर्याप्त मोटा हो गया था और उपभोक्तावादी संस्कृति में रम सकता था। उसकी इस प्रवृत्ति को बस हवा देने की जरूरत थी। राजीव गांधी के इक्कीसवीं सदी के नारे ने यही काम किया।

जब **1991** में निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण को एक झटके से नये स्तर पर पहुंचा दिया तो मध्यम वर्गीय उपभोक्तावाद को पर लग गये। पश्चिम की उपभोग सामग्रियां अपने देशी–विदेशी संस्करण में उसके लिए उपलब्ध हो गई और संचार माध्यमों (खासकर टी. वी.) की कृपा से वह लगातार उपभोक्तावाद में लिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया जाने लगा। उपभोक्तावाद में लिप्त होने के मामले में उसकी जो भी वर्जनाएं थी सब एक झटके में टूट गईं। वह वैश्विक उपभोक्ता संस्कृति से एकाकार हो गया। अब उसकी जेब की सीमा ही इस मामले में उसकी सीमा थी।

क्रय शक्ति के अलावा देश के पूंजीवादी विकास ने अन्य तरीके से भी उपभोक्तावाद के लिए जमीन तैयार की थी। पूंजीवादी विकास के कारण मध्यम वर्ग अधिकाधिक तथाकथित भारतीय संस्कृति से दूर होता गया। संयुक्त परिवार के विघटन ने उसे सारी जिम्मेदारियों से मुक्त कर स्वयं में रमने का आधार प्रदान कर दिया। पूंजीवादी संबंधों के विकास ने अन्य मानवीय संबंधों और भावनाओं को पीछे ढकेल दिया। आना–पाई और पूंजीवादी उपभोग के संबंध ही अब प्रधान हो गये।

उपभोक्तावादी संस्कृति के लिए पूर्णतः तैयार मध्यम वर्ग मौका मिलते ही उसमें ढुलक गया। वह निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण का उत्साही समर्थक बन गया। जिन नीतियों ने उसे इतनी सारी उपभोग सामग्री और उन्हें खरीदने की क्षमता प्रदान की थी, वह उन्हें हर तरीके से जायज ठहराने लगा।

भारत के पूंजीपति वर्ग ने विकास का जो मॉडल चुना था उसी में अंतर्निहित था कि देश की एक भारी आबादी पूंजीवादी विकास की प्रक्रिया में या तो पीछे छूट जाती या फिर तबाह होकर हाशिये पर चली जाती। इस विकास में पूंजीवादी संबंधों का तो हर जगह प्रसार हो रहा था। लेकिन एक भारी अबादी को सार्थक रोजगार नहीं मिल पा रहा था। एक भारी आबादी नकदी के रिश्ते में तो बंध जा रही थी लेकिन केवल एक लम्बी प्रक्रिया में तबाह होने के लिए। एक भारी आबादी क्रय शक्ति से लगभग वंचित थी।

ऐसे में पूंजीपति वर्ग अपने संचय के लिए देश के एक छोटे हिस्से की क्रय शक्ति पर ही निर्भर कर सकता था। यही उसके मालों का बड़ा खरीददार बन सकता था। बाकी आबादी की क्रय शक्ति, संख्या में ज्यादा होने के बावजूद, सापेक्षतया काफी कम थी। यह पूंजीपति वर्ग के लिए महत्वपूर्ण होने के बावजूद बड़ा बाजार नहीं बन सकता था। हां, यह अन्य तरीके से संचय में सहायक था। इसके

आवश्यक श्रम (बेशी श्रम के मुकाबले) और छोटी सम्पत्ति हो हड़प कर पूंजीपति और ज्यादा अपनी पूंजी को बढ़ा सकता था। और उसने बाजार की शक्तियों का इस्तेमाल करके यह बड़े पैमाने पर किया है।

मध्यम वर्ग के पास पर्याप्त क्रय शक्ति होने के कारण पूंजीपति वर्ग ने निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण के तहत इसी को लक्ष्य बनाया। यही नहीं, इसने भारत के इस मध्यम वर्ग को देश में विदेशी पूंजी को आमंत्रित करने के लिए चारे की तरह भी इस्तेमाल किया। चारों ओर 'मध्यम वर्ग', 'मध्यम वर्ग' की दुंदुभि बज उठी। मध्यम वर्ग के बल्ले–बल्ले हो गये। वह नयी नीतियों का लक्ष्य और वाहक बन गया।

नयी नीतियों ने इस वर्ग को केवल उपभोक्ता सामग्री ही नहीं सुलभ कराई। उसने इसकी क्रय शक्ति भी बढ़ाई। विदेशी कंपनियों के आने और देशी कंपनियों को छूट दिये जाने के कारण मध्यम वर्ग के ऊपरी हिस्से की आमदनी तेजी से बढ़ी। जहां मजदूर वर्ग की तनख्वाहें कम होती गई, वहीं इसकी तनख्वाहें बढ़ती गई। यहां तक कि इन नीतियों के जनक मनमोहन सिंह को भी इन पर चिंता जतानी पड़ी। आज मध्यम वर्ग का ऊपरी हिस्सा हिन्दुस्तान में रहते हुए भी विदेशी जीवन शैली जी रहा है। कोई आश्चर्य नहीं कि पिछले कुछ सालों में 'ब्रेन ड्रेन' (प्रतिभा पलायन) की समस्या कुछ कम हुई है।

मजदूर–मेहनतकश जनता के प्रति विरोधी रुख को निजीकरण–उदारीकरण– वैश्वीकरण की नीतियों के सम्बन्ध में समझा जा सकता है। नेहरू का 'कल्याणकारी राज' पूंजीपति वर्ग के लिए पूंजीवादी विकास का एक मॉडल था। लेकिन इसके 'कल्याणकारी' होने के चलते ही मध्यम वर्ग के लिए यह संभव था कि वह अपने विकास और बाकी जनता के कल्याण में कोई असमाधेय विरोध न देखे। इस मॉडल में विकास मूलतः पूंजीपति वर्ग का हो रहा था और किसी हद तक मध्यम वर्ग का भी। लेकिन जनता का विकास भी कम से कम औपचारिक तौर पर इसका लक्ष्य था।

पर जब पूंजीपति वर्ग ने नयी नीतियां लागू कीं तो उसने 'कल्याणकारी राज' पर तीखा हमला किया। अब आम मजदूर–मेहनतकश जनता के हित और मध्यम वर्ग तथा पूंजीपति वर्ग के हित विरोधी हो गये। 'कल्याणकारी राज' के बंधन से मुक्ति पाकर ही पूंजीपति वर्ग तेज गति से संचय कर सकता था। कम से कम वह ऐसा सोच रहा था। इसलिए उसने उस पर हमला बोला। उसके सुर में सुर मिलाते हुए मध्यम वर्ग भी इस हमले में शामिल हो गया। वह मजदूर–मेहनतकश जनता से न केवल अलग हो गया, बल्कि उसके विरोध में चला गया।

सामाजिक तौर पर मध्यम वर्ग का आत्म केन्द्रित होते जाने का भी यही कारण था। पूंजीपति वर्ग अपने 'कल्याणकारी राज' के असली चरित्र से पहले भी वाकिफ था। आज भी, जब 'कल्याणकारी राज' लगभग समाप्त किया जा चुका है, यह अपने शासन की सीमाओं से परिचित है और बहुत कुछ ऐसा कर सकता है जो नव उदारवाद के सिद्वान्त से मेल नहीं खाते। लेकिन अपने झूठे अस्तित्व और झूठी चेतना के कारण मध्यम वर्ग इसको नहीं समझता। वह 'कल्याणकारी राज्य' के खात्मे समेत सारी नव उदारवादी नीतियों को अमूर्त तौर पर लेता है। वह उन्हें चरम पर पहुंचते देखता है। ऐसा करते हुए वह मजदूर वर्ग और बाकी मेहनतकश जनता को दिये जाने वाले किसी भी राहत को गलत और हानिकारक समझने लगा। उसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए इसे अत्यन्त घातक मान लिया है और इस तरह मुकम्मल सिद्वान्तों से स्वयं को लैस कर वह अपने खोल में दुबक गया। उसे अपने वर्ग स्वार्थों के लिए पर्याप्त स्पष्टीकरण मिल गया। उसकी अंतरात्मा शान्त हो गई। वह देश हित, देश की अर्थव्यवस्था के हित एवं स्वयं मजदूर–मेहनतकश जनता के हित में निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण का समर्थक बन गया।

IV मध्यम वर्ग में विभेदीकरण

उपरोक्त मध्यम वर्ग समूचे मध्यम वर्ग का छोटा सा हिस्सा है। लेकिन यह विकासमान प्रवृत्ति है और इस प्रवृत्ति के कई लक्षण मध्यम वर्ग के अन्य हिस्सों में भी विद्यमान हैं। लेकिन भारत के मध्यम वर्ग की समग्र तस्वीर हासिल करने के लिए इसके विभिन्न हिस्सों के बारे में बात करना जरूरी है।

उपरोक्त मध्यम वर्ग समग्र मध्यम वर्ग का ऊपरी हिस्सा है और नेतृत्वकारी और ट्रेंड सेटर है। यह मूलतः तनख्वाह पाने वाले पेशेवर लोगों से मिलकर बना है। प्रबन्धक, इंजीनियर, डॉक्टर, बड़े वकील, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर तथा अन्य पेशेवर लोगों से मिलकर यह बना है। इसी में नये–नये पैदा हुए छोटे–छोटे व्यवसायी भी हैं। यह मूलतः बड़े शहरों का बाशिंदा है। हाउसिंग सोसाइटीज और शॉपिंग माल इसी से जुड़े हुए हैं।

मध्यम वर्ग का यह ऊपरी हिस्सा मूलतः सवर्ण हिन्दू है और यह इसकी मानसिक बनावट में अभिव्यक्त होता है। आरक्षण विरोधी 'यूथ फॉर इक्वलिटी' और 'जागो पार्टी' जैसी संस्थाएं इसी वर्ग की उपज हैं।

इसके मुकाबले मध्यम वर्ग का एक बड़ा हिस्सा है जो बड़े शहरों से लेकर कस्बों और गांवों तक फैला हुआ है। इसमें बाबू, सुपरवाइजरों से लेकर अध्यापकों की एक लम्बी कतार है। इसकी आमदनी इतनी नहीं है कि वह उपभोक्ता सामग्री पर उस तरह से मुक्तहस्त खर्च कर सके जैसे मध्यम वर्ग का ऊपरी हिस्सा करता है। लेकिन इसकी उपभोक्तावादी आकांक्षाओं में किसी तरह की कमी नहीं होती और इसीलिए इसके जीवन की त्रासदी कई गुना बड़ी हो जाती है।

मध्यम वर्ग के निचले हिस्से की स्थिति वास्तव में अत्यन्त त्रासद है। निम्न मध्यम वर्ग उपभोक्तावाद की जूठन ही बटोर पा रहा है और इसकी कुंठाएं लगातार बढ़ रही हैं। यह समूचे मध्यम वर्ग का सबसे बड़ा हिस्सा है। उदारीकरण–वैश्वीकरण की नीतियों के चलते समाज में जो ध्रुवीकरण हो रहा है उसमें इसके सर्वहारा की पांतों में शामिल हो जाने का खतरा बढ़ रहा है। वास्तव में तो निम्न मध्यम वर्ग का बड़ा हिस्सा अभिजात मजदूरों से ही बना हुआ है। ऐसे मजदूर अपनी अभिजात स्थिति खोने के खतरे से जूझ रहे हैं।

मध्यम वर्ग में इस वर्गीय विभाजन के साथ अन्य विभाजन भी मौजूद हैं। जैसा कि पहले कहा गया है, दलितों और पिछड़ी जातियों से भी एक मध्यम वर्ग का विकास हुआ है। यह ज्यादातर आजादी के बाद की परिघटना है। यह दलित और पिछड़ा मध्यम वर्ग अपने सारतत्व में सवर्ण मध्यम वर्ग जैसा ही है। इसकी मुख्य चारित्रिक विशेषताएं वही हैं। लेकिन भिन्न पृष्ठभूमि से आने के कारण कुछ आनुषंगिक विशेषताएं भी इनमें पैदा हो जाती हैं। सवर्ण मध्यम वर्ग द्वारा आरक्षण का विरोध किसी हद तक ध्रुवीकरण पैदा करता है और समांग मध्यम वर्ग की पैदाइश में बाधा बनता है।

पिछड़ी और दलित जातियों से पैदा हुए मध्यम वर्ग में ऊपरी हिस्सा संख्या में छोटा है जबकि निचला हिस्सा बड़ा है। यहां अनुपात सवर्ण मध्यम वर्ग के मुकाबले और ज्यादा नीचे झुका है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में धार्मिक तौर पर भी विभाजन मौजूद है। खासकर इस्लाम धर्म के अनुयाइयों के मामले में यह ज्यादा मुखर है। मुसलमानों में मध्यम वर्ग की स्थिति थोड़ा–बहुत फर्क के साथ हिन्दुओं के पिछड़ी जाति के मध्यम वर्ग की तरह ही है। लेकिन पिछले दो

दशकों से साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण ने इस मध्यम वर्ग को अलगाव में डाला है और हाल के समय में तो यह बंदी मानसिकता में आ गया है। हिन्दू कट्टरपंथी अब ईसाईयों के साथ भी यही करने का प्रयास कर रहे हैं।

इनके मुकाबले सिख मध्यम वर्ग की स्थिति भिन्न है। वह अब 1980 के दशक की उस स्थिति से उबर गया है जब वह हिन्दू कट्टरपंथियों का निशाना बना हुआ था। अब तो वह भारत के युप्पी मध्यम वर्ग का अभिन्न हिस्सा है।

इन विभाजनों के साथ मध्यम वर्ग में किसी हद तक राष्ट्रीय विभाजन भी मौजूद है। इसके अलावा लैंगिक पूर्वाग्रह और भेदभाव भी बड़े पैमाने पर मौजूद हैं।

अभी तक जिस मध्यम वर्ग की बात की गयी है वह भारत में पूंजीवाद के साथ उभरा मध्यम वर्ग है चाहे वह आजादी के पहले का हो या बाद का। यह तनख्वाह पाने वाला या स्वतंत्र पेशेवर है। लेकिन इसके साथ ही भारत में एक अन्य मध्यम वर्ग भी मौजूद रहा है। इसे पुराना मध्यम वर्ग कह सकते हैं। यह छोटी सम्पत्ति का मालिक है और अपनी छोटी सम्पित्ति बचाने में एड़ी–चोटी का जोर लगा रहा है। छोटे–मझोले किसान, छोटे–मझोले दुकानदार, दस्तकार, छोटे व्यवसायी इसी श्रेणी में आते हैं। उदारीकरण–वैश्वीकरण के साथ इस छोटे मध्यम वर्ग के सामने जीवन–मरण का प्रश्न खड़ा हो गया है। आत्महत्या करते किसान और बुनकर तथा बड़ी कंपनियों के सामने उजड़ते छोटे दुकानदार आने वाले समय के संकेत मात्र हैं।

उत्पादन और सेवाओं के विकेन्द्रीकरण तथा आउटसोर्सिंग ने छोटे व्यवसाइयों की एक नयी कतार को जन्म दिया है यह पेटी बुर्जुआ का नया हिस्सा है। लेकिन समय के साथ पेटी बुर्जुआ का पुराना हिस्सा नष्ट होता जायेगा जबकि नया हिस्सा अधिकाधिक तन्ख्वाह पाने वाले कर्मचारियों में रूपान्तरित हो जायगा। औपचारिक नहीं तो अनौपचारिक तौर पर यही होगा।

पूंजीवाद की दूरगामी प्रवृत्ति छोटी सम्पत्ति को नष्ट कर देने की है। पूंजीवाद पूंजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग के बीच के छोटे उत्पादकों को नष्ट कर देता है। इसके बदले वह पूंजी के वेतनभोगी सेवकों को पैदा करता है जो सुपरवाइजर, इंजीनियर, प्रबन्धक, बाबू, अध्यापक, वकील इत्यादि के तौर पर उसकी सेवा करते हैं। छोटे उत्पादकों के पुराने पेटी बुर्जुआ को नष्ट कर इस नये पेटी बुर्जुआ को पैदा करना पूंजीवाद की आम प्रवृत्ति है। लेकिन भारत में यह परिघटना अत्यन्त विकृत और धीमी है। जैसा कि पहले चिर्ति किया गया है, भारत के विशिष्ट पूंजीवादी रूपान्तरण के कारण छोटे उत्पादक यदि उजड़ भी रहे हैं तो वे उजरती मजदूर या वेतनभोगी कर्मचारी नहीं बन पा रहे हैं। वे अन्य तरीकों खासकर छोटी खरीद–बेच, से अपनी जीविका चलाने के लिए अभिशप्त हैं।

इन सबका भारत के मध्यम वर्ग की संरचना पर प्रभाव पड़ता है।

V मध्यम वर्ग के अंतर्विरोध

अपने सारे बदलाव के बावजूद मध्यम वर्ग का मूल अंतर्विरोध वही है। पूंजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग के बीच की स्थिति का मूल अंतर्विरोध अभी भी पूरी शक्ति से कार्य कर रहा है।

मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं और उसके यथार्थ के बीच अंतर्विरोध उसे लगातार हैरान–परेशान किये रहता है। वह पूंजीपति बन जाने के सपने देखता है लेकिन हालात लगातार उसे नीचे ढकेलते हैं। वह पूंजीपतियों के खेल में शामिल होता है लेकिन केवल पिटने के लिए। मध्यम वर्ग के ऊपरी हिस्से में शेयर बाजार के प्रति लगाव और उसका हश्र इसे त्रासद ढंग से स्पष्ट करते हैं। मध्यम वर्ग पूंजीपति वर्ग को शेयर बाजार में अरबों–खरबों कमाते देखता है और लालच में आकर अपनी सारी जमा पूंजी उसमें निवेश कर देता है। बाद में वह पाता है कि शेयर बाजार के बड़े खिलाड़ी अपनी झोली भर कर चंपत हो गये हैं और वह लुटा–पिटा अपनी चोट सहला रहा है।

पुराना मध्यम वर्ग तिनका–तिनका जोड़कर पूंजीपति बनने के ख्वाब देखता था। बड़े पूंजीपतियों के लोटा–डोरी की कहानियां उसे बहुत भाती थीं। अब नया मध्यम वर्ग बिल गेट्स और जॉर्ज सोरोस बनने के सपने देखता है। बस वह इतना भूल जाता है कि एक सफल बिल गेट्स के पीछे हजारों असफल लोगों की त्रासद गाथा छिपी हुई है। झूठी चेतना का शिकार मध्यम वर्ग इस तथ्य को जान कर भी नहीं जानना चाहता।

कारपोरेट व्यवस्था उसकी इस मृग मरीचिका को बनाए रखती है। निगमों के प्रबन्धक का काम अधिकाधिक पेशेवर लोगों के हाथों में आने के कारण मध्यम वर्ग में यह भ्रम पुख्ता होता है कि वह अपनी काबिलियत के बल पर किसी दिन स्वयं उस स्थिति में पहुंच जायेगा। वह इस तथ्य को ध्यान में नहीं रख पाता कि अमेरिका में आज भी आधे शेयर केवल ऊपरी 1 प्रतिशत आबादी के पास हैं। ये मालिक लोग थोड़े से लोगों को और वह भी काफी ठोक–बजाकर अपने में शामिल करते हैं।

पूंजीवाद में तरक्की की यह चाहत और तरक्की करने के लिए निजी रणनीति (अपनी योग्यता के बल पर आगे बढ़ना) मध्यम वर्ग को सामूहिक जीवन और सामूहिक संघर्ष के अयोग्य बना देती है। पुराने मध्यम वर्ग को निजी सम्पत्ति का विलगाव (किसान) या प्रतियोगिता (दुकानदार, छोटे व्यवसाई) साथ आने से रोकती थी। वह समूहबद्व नहीं हो पाता था। नया मध्यम वर्ग तरक्की की निजी रणनीति के चलते समूहिक संघर्ष के अयोग्य हो जाता है।

पेटी बुर्जुआ की निजी योग्यता ही उसके लिए सब कुछ है। वह जो कुछ है अपनी निजी कोशिशों, निजी क्षमता के कारण। वह जहां तक पहुंचा है स्वयं अपने प्रयास के कारण। वह आगे भी जहां तक पहुंचेगा, अपने प्रयास के कारण ही। कम से कम पेटी बुर्जुआ अपनी चेतना में इसे इसी रूप में ग्रहण करता है। निजी योग्यता और प्रतियोगिता उसकी चेतना में बद्वमूल हो जाती है। पूंजीवाद के नियमों की अमूर्त समझदारी उसकी चेतना को और ज्यादा पुख्ता करती है। इस तरह तीन–तिकड़मों में व्यस्त एकाधिकारी पूंजीपति प्रतियोगिता और निजी योग्यता की हकीकत को समझता है लेकिन पेटी बुर्जुआ नहीं।

मजदूर वर्ग की सामूहिक संगठन की सुरक्षा और पूंजीपति वर्ग की पूंजी की सुरक्षा से वंचित पेटी बुर्जुआ आशंकाओं और अनिश्चितताओं की दुनिया में ऊभ–चू करता रहता है। संयुक्त परिवार की सुरक्षा से भी वंचित परमाणवीकृत यह पेटी बुर्जुआ एक साथ बेचारगी और दंभ का मूर्तरूप हो जाता है।

यह पेटी बुर्जुआ सरकार और सार्वजनिक जीवन के प्रति पूर्णतया आत्मकेन्द्रित रुख ग्रहण कर लेता है। एक ओर यह निजीकरण का समर्थक है लेकिन स्वयं निजीकरण की विभीषिकाओं को नहीं झेलना चाहता। यह चाहता है कि सरकार एकदम सीमित हो जाय लेकिन उसके लिए हमेशा उपलब्ध रहे। वह सब्सिडी समाप्त करना चाहता है लेकिन उसे मिलती रहनी चाहिए। यानी सरकार को मजदूर–मेहनतकश वर्ग से सब कुछ छीनकर इसे समर्पित कर देना चाहिए।

इसे पूंजीवादी राजनीति, पूंजीवादी पार्टियों और नेताओं से घृणा है। लेकिन इसी कारण कि उसे लगता है कि ये लोकप्रियतावादी हैं। और इस चक्कर में देश का बेड़ा गर्क किये दे रहे हैं। झूठी चेतना का शिकार होने के चलते वह लोकतंत्र और पूंजीवाद के असली

रिश्ते को नहीं समझ पाता। वह लोकतंत्र को आदर्श व्यवस्था मानकर उसकी प्रशंसा करता है जबकि ठीक उसी समय वह पूंजीवादी नेताओं को गालियां देता है।

अमूर्त लोकतंत्र का समर्थक होने के बावजूद इसकी प्रवृत्ति तानाशाही की होती है। उसे लगता है कि लोग लोकतंत्र का दुरुपयोग कर रहे हैं और अराजकता फैला रहे हैं। यह देश यानी उसके विकास में बाधक है। इसका अंत होना चाहिए। पूर्णतया अराजक होने के बावजूद वह दूसरों के लिए पूर्ण अनुशासन की मांग करता है और इसके लिए किसी तरह की तानाशाही से उसे गुरेज नहीं है। संघ परिवार के विकास में इस प्रवृत्ति का महत्वपूर्ण योगदान है। यह ध्यान रखना चाहिए कि एल.पी.जी मध्यम वर्ग का उदय और संघ परिवार का उत्थान दोनों एकसाथ हुए हैं। संघ परिवार के फासीवाद और इस वर्ग की तानाशाही की प्रवृत्ति में काफी तादात्म्य है। परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व भी मध्यम वर्ग के लिए अत्यन्त तीखा है और वह उसे अजीबोगरीब तरीके से हल कर रहा है। वास्तव में कहें तो एकाधिकारी पूंजी इसे इस मामले में रास्ता ही नहीं दिखा रही है अपितु इसके सामने बना–बनाया समाधान पेश कर रही है। जैसा कि पहले कहा गया है, बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हर स्थानीय समाज में अपना माल बेचने के लिए एक चतुर नीति अख्तियार की। उन्होंने अपने उत्पाद का, अपने माल का स्थानीयकरण कर दिया यानी उन्हें स्थानीय संस्कृति और मानसिकता को ध्यान में रखते हुए पेश किया। यही नहीं उन्होंने अपना माल बेचने के लिए स्थानीय त्यौहारों और रीति–रिवाजों का इस्तेमाल किया।

बहुराष्ट्रीय निगमों के मालों से उपभोक्तावाद में दीक्षित भारतीय मध्यम वर्ग को यह बहुत सुभीते का लगा। इस तरीके से वह परंपरा और आधुनिकता के द्वन्द्व से बहुत आसानी से मुक्त हो गया। वह अब निर्द्वन्द्व मन से करवाचौथ और रक्षाबन्धन मना सकता था। सारे तामझाम और आधुनिकता साजो सामान से लैस मंडप में वह पंडित से मंत्रोच्चार करवा सकता था।

इस तरह हुआ यह कि अधिकाधिक विज्ञान और तकनीक पर निर्भर होते हुए समाज में इन तकनीक का सबसे ज्यादा इस्तेमाल करने वाले पेटी बुर्जुआ ने बहुत आसानी से पोंगापंथ में डुबकी लगा ली। वह कम्प्यूटर से जन्म कुंडलियां बनवाने लगा और हर रोज प्रचार माध्यमों में अपना भविष्य वाचन करने लगा। इस तरह हुआ यह कि ऊपरी तरह पूर्णतया आधुनिक जीवन वाला मध्यम वर्ग अपने अंतर्मन में पुरानी परंपराओं को छिपाये रहा और उपभोक्तावाद में लिप्त रहते हुए इसके द्वन्द्व से भी मुक्त हो गया। पतित साम्राज्यवाद ने स्थानीय समाजों में पतन का एक और काम अंजाम दिया। यदि पुराने औपनिवेशिक साम्राज्यवाद ने अपने शासन के लिए स्थानीय समाजों की रूढ़िवादी परंपराओं का इस्तेमाल किया था तो यह साम्राज्यवाद भी उससे पीछे नहीं है। यह भी अपनी बारी में यही कर रहा है।

देश के प्रति रुख में भी इसके अंतर्विरोध अभिव्यक्त होते हैं। एक ओर तो वह अपने देश को बहुत मजबूत और वैश्विक ताकत देखना चाहता है। दूसरी ओर यह मौका मिलते ही देश छोड़कर भाग जाता है। इस तरह वह देश प्रेमी और देश द्रोही दोनों है। वास्तव में वह केवल अपने प्रति प्रतिबद्व है। देश के प्रति उसकी भावना का साम्राज्यवादी पूंजी दक्षता से इस्तेमाल करती है। पेप्सी व कोक जैसी कंपनियां हर देश के खिलाड़ी को अपना विज्ञापनकर्ता बना लेती है और विज्ञापन में उसे पक्के देश भक्त के रूप में पेश करती हैं।

पूंजीवादी विकास की यह आम प्रवृत्ति है कि सामंती समाज के पुराने वर्गों को समाप्त कर अपने और मजदूर वर्ग के अंतर्विरोध को स्पष्ट करता जाता है। इसी से मध्यम वर्ग की भूमिका तय होती जाती है।

जब पूंजीपति वर्ग सामंती वर्गों और साम्राज्यवाद से लड़ रहा होता है, राष्ट्र निर्माण के काम में संलग्न होता है तब मध्यम वर्ग इसमें एक सकारात्मक भूमिका निभाता है। किसी अन्य सामूहिक भावना से रिक्त यह वर्ग राष्ट्र में अपनी अभिव्यक्ति पाता है और उसके लिए लड़ता है।

लेकिन जब पूंजीवादी समाज स्थापित हो जाता है और पुराने वर्ग लुप्त हो जाते हैं तब इसकी भूमिका बदल जाती है। अब यह क्रांतिकारी वर्गों का हिस्सा न रह कर तटस्थ वर्ग की भूमिका में पहुंच जाता है। मजदूर वर्ग की पूंजीवाद विरोधी क्रांति में इसके तटस्थ होने की ही संभावना ज्यादा होती है।

आज का भारतीय मध्यम वर्ग भी इसी स्थिति में खड़ा है। खासकर निजीकरण–उदारीकरण–वैश्वीकरण के दौर में इसने जो रूप ग्रहण किया इसके चलते यह न केवल मजदूर वर्ग एवं अन्य मेहनतकश वर्गों के प्रति असंवेदनशील हुआ है बल्कि यह उनके विरोध में भी चला गया है। एल पी जी पेटी बुर्जुआ आम जनता के खिलाफ खड़ा है। यह खुद को ही आम आदमी मानते हुए देश को अपने लिए हस्तगत कर लेना चाहता है। निहायत आत्म केन्द्रित यह वर्ग खुद के लिए सारा कुछ हड़प लेना चाहता है। स्थिति वहां पहुंच गई है कि जहां वह मजदूर वर्ग की हड़ताल, आंदोलनों को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है। बंद पर न्यायालयों के फैसले और उसको मध्यम वर्ग का समर्थन इसी की अभिव्यक्ति हैं।

परन्तु स्वयं उदारीकरण–वैश्वीकरण की प्रक्रिया ही उसके बीच विभाजन को तीखा करेगी। खासकर जब व्यवस्था का संकट गहरायेगा तब इसके निचले हिस्से का जीवन बहुत कठिन हो जायेगा। तब इस बात की संभावना प्रकट होगी कि यह हिस्सा मध्यम वर्ग के भ्रमों से मुक्त होकर मजदूर वर्ग के साथ आ खड़ा हो।

परिशिष्ट

मध्यम वर्ग का आकार

तालिका–1

(सामाजिक समूहों के हिसाब से आय वर्ग का वितरण–प्रतिशत में) 2004–05

क्रम संख्या	आर्थिक स्थिति	अनुसूचित जाति/जनजाति	सभी पिछड़े (मुसलमानों को छोड़कर)	सभी मुसलमान (एससी/एसटी को छोड़कर)	अन्य
1	अति गरीब	10.9	5.1	8.2	2.1
2	गरीब	21.5	15.1	19.2	6.4
3	थोड़े गरीब	22.4	20.4	22.3	11.1
4	कमजोर	33.0	39.2	34.8	35.2
5	मध्यम आय	11.1	17.8	13.3	34.2
6	उच्च आय	1.0	2.4	2.2	11.0
7	आबादी	30.2	39.1	13.8	25.8

(स्त्रोत : Report on Condition of Work and Promotion of livelihoods in the Unorganised sector, Acadamic Foundation,2008,Page-7)

तालिका–2

(सामाजिक समूहों के हिसाब से आय वर्ग का वितरण–प्रतिशत में) **2001**

क्रम संख्या	**परिसम्पत्ति**	**शहरी घर**	**देहतरी घर**	**कुल**
1	रेडियो	44.5	31.5	35.1
2	टी.वी.	64.3	18.9	31.6
3	साइकिल	46.0	42.8	33.7
4	स्कूटर,मोटर साइकिल या मोपेड	24.7	6.7	11.7
5	कार,जीप या वैन	5.6	1.3	2.5
6	कोई भी नहीं	19.0	40.5	34.5
7	बैंक खाता	49.5	30.1	35.5

(स्त्रोत : Leela Fernades, India's New middle class' OUP, New Delhi, 2006,Page-81)